REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

मन्नू भंडारी और मामनी रायसम गोस्वामी की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ जोनाली बरुवा

साहित्य का रसास्वादन तथा इसकी महत्ता को समझने के लिए तुलनात्मक साहित्य की परम आवश्यकता है। तुलना करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। मनुष्य की इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण ही साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन का श्री गणेश हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य साहित्य में समाहित वैश्विक विचारों को उद्घाटित करना है।

भारतीय साहित्य और समाज यद्यपि विविधता का पर्याय है फिर भी करीब से देखने से यह महसूसा जा सकता है कि इसकी मूल चेतना एक ही है। भारत की विविधता में एकता की इस विशेषता को विभिन्न कलाओं के माध्यम से समझा जा सकता है और साहित्य भी उनमें से एक उपादान है जिसके माध्यम से यह एकता सहज ही समझी जा सकती है। भिन्न प्रकृति के अलग-अलग समाज और साहित्य में किस तरह एकता का एक ही स्वर बोलता है, उसे तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से ही जाना जा सकता है। मामनि रॉयसम गोस्वामी साहित्यिक जगत में अपना एक विशिष्ट पहचान रखने वाली एक सशक्त हस्ताक्षर है। पाठकों के मन-मस्तिष्क में सामाजिक जीवनबोध जगाने में सक्षम इस लेखिका ने असमिया साहित्य को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। असम और असमिया की पर्याय स्वरूप मामनि रॉयसम गोस्वामी ने अपने साहित्य में जीवन के विविध रंगों को जिस बखूबी से उतारा है वह असमिया साहित्याकाश में हमेशा उज्जवल नक्षत्र की तरह चमकता रहेगा।

मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य जगत की एक जानी-मानी लेखिका हैं। समस्त नारी जाति के लिए गंभीर आस्था के स्वर दिखाई देने वाले मन्नू भंडारी के साहित्य में भारतीय नारी के विभिन्न रूपों का यथार्थ चित्रण हुआ है। उन्होंने नारी जाति के सबल और दुर्बल दोनों पक्षों को अपनी लेखनी में सहज रुप से उतारकर नारीवादी दृष्टिकोण से समाज के प्रति जागरूक एक लेखिका के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई है।

इन दोनों महान लेखिकाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के लिए उनकी कहानियों को आधार बनाया गया है। दोनों लेखिकाओं की कुछ चुनिंदा कहानियों को लेकर उनमें इन लेखिकाओं

LBP PUBLICATION

का जीवन-बोध, जीवन को देखने-परखने का उनका दृष्टिकोण, और नारीवादी चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मामनि रॉयसम गोस्वामी की कहानियाँ :

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में असमिया साहित्य क्षेत्र में मामनि रॉयसम गोस्वामी एक जानी-मानी लेखिका हैं। एक रचनाशील लेखिका, मौलिक चिंतन से समृद्ध रचना संसार की मलिका तथा इतिहास सम्मत शोधपरक और विचारशील उपन्यासकार, कहानीकार और कवि। उनकी कहानियों में एक अलग स्वाद, समस्त मानव के प्रति प्रेम दिखाई देता है।

मामनि रॉयसम गोस्वामी की बहुतचर्चित और सफलतम कहानियों में से एक है 'हृदय' । अपने शीर्षक के अनुसार ही इस कहानी का मूल कथ्य भी अपने अंदर जैसे कई राज छुपाए हुए है। कहानी का अधिकांश भाग रॉबर्ट ठाकुर के अतीत की स्मृतियों का मंथन है, जिसमें अतीत और वर्तमान एकाकार हो जाते हैं। इसमें कोई कहानी वर्णित नहीं की गई है अपितु रॉबर्ट ठाकुर के जीवन के चंद यादगार पलों के दृश्यों का सजीव वर्णन ही कहानी का मूल कथ्य है। रॉबर्ट ठाकुर के मन को उद्वेलित करने वाली अतीत की स्मृतियों और भावनाओं का ज्वार उनके वर्तमान जीवन में जैसे घुल-मिल गया है। रॉबर्ट ठाकुर दिल्ली विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त अध्यापक हैं और किताबें ही उनके जीवन की सहयात्री हैं। अपने छात्र-छात्राओं के साथ भी उनका संबंध काफी मधुर है और आज भी अपने जीवन की सफलता की सूचना देने उनके पुराने छात्र रॉबर्ट ठाकुर के घर आते रहते हैं। रॉबर्ट ठाकुर मेहनत की महत्ता को अच्छी तरह जानते-समझते हैं। वे जानते हैं कि कठोर परिश्रम ही सफलता की कुंजी है, इसलिए वे परिश्रमी छात्रों को दिल से आशीर्वाद देते हैं। काव्यालरी लाइन स्थित अपने आवास के सामने वाले गुलमोहर के तले बेंत की कुर्सियां लगाकर वे अपने छात्र-छात्राओं के साथ विचार विमर्श करते हैं। चर्चा के विषय में अक्सर रहती हैं शेक्सपियर की मजेदार कहानियाँ। जीवन में सफल होने वाले छात्रों के पास इतना समय नहीं होता कि वे रॉबर्ट ठाकुर के यहाँ अधिक समय व्यतीत करें। लेकिन बेरोजगार अथवा अन्य किसी निजी काम से उनके पास आने वाले छात्र लंबे समय तक उनके साथ बैठा करते थे। वे अपनी समस्याओं के बारे में बात करते थे और रॉबर्ट ठाकुर बड़े धैर्य से उनकी बातें सुना करते थे और इस प्रकार बैठकर अपने छात्र छात्राओं की बातें सुनना जैसे उनकी आदत सी हो गई थी। अंग्रेजी विभाग के छात्र-छात्राओं के बीच रॉबर्ट ठाकुर काफी लोकप्रिय थे। इसका एक कारण शायद यह था कि दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्य किसी भी अध्यापक के सामने छात्र-छात्रा अपनी निजी समस्याओं की बात करने का साहस नहीं करते थे। धीरे-धीरे रॉबर्ट ठाकुर को यह महसूस होने लगा कि उनके यहाँ आने वाले सभी छात्र सत्चरित्र या अच्छे नहीं हैं बल्कि कुछ बुरे लड़के भी उनके यहाँ आते हैं। यह बात उन्हें काफी देर से पता चली और इस वास्तविकता से वाकिफ होने पर उनके दिल को गहरा आघात लगा। इलियट की भावनाओं के साथ रॉबर्ट ठाकुर के संबंध इतने गहरे थे कि इलियट के बारे में नई पीढ़ी के विद्वान लेखकों द्वारा

दिए जाने वाले तर्क और विश्लेषण उनके मन को संतोषजनक नहीं लगता था। इन सबके बीच एक अथाह गहराई को ढूंढते हुए कभी-कभी उनका हृदय हाहाकार कर उठता था। कभी कभी अपनी मां की यादें रॉबर्ट साहब को परेशान करती थी। तब वे तीस साल के युवा थे। पुरोहित बनने की इच्छा को माँ जोफाइन के लिए छोड़कर अंग्रेजी विभाग के अध्यापक बनकर वे दिल्ली विश्वविद्यालय में चले आए थे। इस तरह इस कहानी में रॉबर्ट साहब के जीवन के अतीत को याद करते हुए ऐसे कुछ दृश्य चित्रित किए गए हैं जिनके माध्यम से रॉबर्ट साहब की मानसिक स्थिति स्पष्ट होती है ।

यात्रा नामक कहानी में जीवन की करुण परिणति का अद्भुत चित्रण है। एक बुजुर्ग दंपति के चरित्रों के इर्द-गिर्द घूमती यह कहानी मानवीय संवेदना को तार-तार करती हुई पाठकों को जीवन की सच्चाइयों के बारे में फिर से एक बार सोचने को मजबूर कर देती है। इस बुजुर्ग दंपति का सुखमय अतीत और वर्तमान की दरिद्रता बयाँ करती हुई पाठकों को बहुत कुछ कह जाती है **यात्रा**। काजीरंगा की यात्रा में निकले मिराजकर की मुलाकात संयोग से इस बुजुर्ग दंपत्ति से हो जाती है और इस दंपति के माध्यम से ही कहानी में मूल्यबोध जगाने का प्रयास किया गया है। मिराजकर के मन में बैठा हुआ आतंकवाद का दहशत असम के नयनाभिराम मनमोहक प्राकृतिक दृश्य को देखकर दूर हो जाता है। "मिराजकर साहब मंत्र मुग्ध होकर दूर की पहाड़ियों को देखते हैं। कहीं पेड़ों की छांव से निर्मित गहरा नीला रंग, कहीं धूप से बनने वाली स्वर्णिम पहाड़ियाँ और कहीं प्रकाश और अंधकार के बीच रहस्यमयी रूप धारण करने वाली पहाड़ियाँ जैसे उन्हें बाँहें फैलाकर बुला रही हैं। ... फिर भी अचानक कभी वे भयभीत हो उठते हैं। ... अगर कहीं से आतंकवादियों की गोलियों की आवाज सुनाई दी तो"...

बुजुर्ग दंपत्ति के आतंकवादी बेटे के चरित्र को कहानी से जोड़कर कहानी को एक नई दिशा प्रदान की गई है। इसके बिना मिराजकर के मन में बैठा आतंकवाद का डर शायद प्रासंगिक नहीं हो पाता। आतंकवाद और इसके परिणाम स्वरुप होने वाली समस्याओं ने किस कदर समाज के प्रत्येक घर को तहस-नहस कर दिया है, कितने लोगों का स्वप्न चकनाचूर कर दिया है, इस बात को कहानी में बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है। समूचे कहानी से मुख्य बात यह निकलकर सामने आती है कि इन सब समस्याओं के बावजूद मानवीय मूल्यबोध अभी भी जीवित है। जीवन में सबकुछ खो चुके बूढे दंपति के चरित्रों से इस मूल्य बोध को स्थापित किया गया है। **यात्रा** कहानी में लेखिका का प्रकृति प्रेम भी उभरकर सामने आया है। सुंदर अतीत और दुर्वह वर्तमान, यंत्रणा दायक कष्ट बोध तथा सांसारिक वार्तालाप कहानी को विशेषता प्रदान करती है। परिस्थिति प्रधान इस कहानी की मूल संवेदना संतान-मोह है।

संस्कार मामनि रॉयसम गोस्वामी की एक चुनौतीपूर्ण कहानी है। पाठक वर्ग में खूब लोकप्रियता हासिल करने वाली इस कहानी का कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। तथाकथित समाज में पिता बनकर वंश-बेल को आगे बढ़ाने की मानसिकता एक चिरंतन सत्य है। संतान नहीं होने से वंश की रक्षा नहीं होगी यह बात सभी के नस-नस में रची बसी है। समाज की इसी

मानसिकता का दमदार और अद्भुत चित्रण है **संस्कार**। अपने वंश की रक्षा नहीं हो सकने की बात से चिंतित पीतांबर महाजन का वंश वृद्धि की आशा से गरीब विधवा ब्राह्मणी से शारीरिक संबंध स्थापित करना, अपने से नीच जाति के पुरुष के साथ संबंध बनाने के कारण दमयंती की मानसिक प्रतिक्रिया और बार-बार गर्भपात कराना - "उसने नष्ट कर दिया। एक शूद्र के बीज को वह नहीं ढोएगी। वह शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मणी है। तुम्हारी संतान को उसने नष्ट कर दिया। पीतांबर ... पीतांबर ..." कहानी की केंद्र बिंदु है। संघर्ष और दरिद्रता की यातना के सु-समन्वित रूप को बड़े ही सुंदर ढंग से इस कहानी में उकेरा गया है। दक्षिण कामरूप के गांव का वातावरण और सामाजिक रीति-नीतियाँ इस कहानी की आधार भूमि है जो वास्तविकता को बयाँ करती है।

लेकिन कहानी की विशेषता इसकी गैर परंपरा वादी और साहसिक विषय वस्तु है। कहानी में कहीं कहीं तो वीभत्सता भी दिखाई देती है। दमयंती के द्वारा अपने भ्रूण की हत्या कर अपने ही हाथों से गड्डा खोदकर मध्य रात्रि को उसे छिपाने का कार्य और पागलों की तरह अपने बीज से बने मांस के लोथड़े को स्पर्श करने की पीतांबर की लालसा का दृश्य वीभत्सता की चरम अवस्था है। कृष्णकांत पुरोहित की धूर्तता और मृत्यु शैय्या पर पड़ी पत्नी के प्रति पीतांबर के क्रूर आचरण को भी कहानी में अनदेखा नहीं किया जा सकता। जीवन की परिस्थितियाँ कभी-कभी इतनी निर्मम हो जाती हैं कि वहाँ न्याय-अन्याय का विचार अप्रासंगिक हो जाता है।

वह निर्मम परिस्थिति, वह अति वास्तव ही तब एक मात्र सत्य के रूप में विवेचित होता है। पीतांबर और दमयंती की परिस्थितियाँ ठीक ऐसी ही हैं। **संस्कार** कहानी के चरित्र गोस्वामी जी के अन्यतम सृष्टि हैं। इस कहानी का प्रत्येक पात्र बिल्कुल सजीव है और प्रत्येक चरित्र अपने आप में पूर्ण है। स्व-विशेषताओं से परिपूर्ण चरित्रों को यथोचित स्थान पर पूरी जीवंतता के साथ स्थापित किए जाने के कारण ही कहानी वास्तविकता के करीब लगती है। इस कहानी के जरिए लेखिका ने साहसिकता का दस्तावेज प्रस्तुत किया है। संस्कार जैसी कहानी लिखने का साहस केवल मामनि रॉयसम गोस्वामी ही कर सकती है। यथार्थ को अकपट रूप से स्वीकार कर सकने का दुस्साहस करने के कारण ही यह लेखिका आज भी वितर्क के घेरे में है।

"आसमान में कुकुरमुत्ते का रंग लिए कुछ बादल विचित्र रूप से पूर्व दिशा में फैले हुए थे। वे एक एक कमान की तरह लग रहे थे, और वह चंद्रमा? जैसे चमड़ी उधेड़ कर रखी हुई कोई हिरणी हो। उसके चितकबरे खाल को मानो किसी ने उस कमान में लपेट कर रख दिया हो। खाल उधेड़ कर रखी हुई हिरणी। लपथप लपथप उसका मांशल देह, चिकना, लिजलिजा। प्रमादित पीतांबर महाजन की नजरों में खाल उधेड़ कर रखी हुई हिरणी दमयंती में रूपांतरित हो गई। बिल्कुल नग्न दमयंती। देखो उसके स्तन-द्वय मानो गर्भिणी बकरी का पेट हो, पके आमों की तरह उसके रसीले होंठ, नहीं नहीं, अधिक समय तक पीतांबर महाजन आसमान की ओर नहीं देख सका"।[4] समाज की प्रचलित परंपरा और उस चारदीवारी के अंदर के नग्न यथार्थ के वर्णन में लेखिका ने निपुणता हासिल की है। डॉक्टर प्रफुल कटकी ने इस कहानी को "क्लासिक कहानी" कहा है ।

बरफर रानी (बर्फ की रानी) कहानी का प्लॉट दिल्ली है। इस कहानी की मुख्य पात्र है सीता देवी। सीता कश्मीरी गेट के नजदीक एक बालिका विद्यालय में काम करती है। वह फरुखाबाद की लड़की है। सिंह सभा रोड गुरुद्वारे के पास की एक बरसाती में वह अपने ही स्कूल की एक सहकर्मी स्नेहलता नामक लड़की के साथ रहती है। दिल्ली महानगर में बेपरवाह इधर-उधर घूमते रहने वाले गाय-बैलों को देखकर वह आश्चर्यचकित होती है। ऐसे ही अपने स्कूल के रास्ते में एक जगह वह एक सफ़ेद गाय को उसके बछड़े के साथ रोज देखती है और अब वह उस गाय को पहचानने लगी है। उन गायों को उनके मालिक तक पहुंचाए जाने संबंधी कई शिकायत पत्र उसने समाचार पत्रों में भेजे लेकिन एक भी प्रकाशित नहीं हुआ। नगर निगम के पास भी वह गुहार लगा कर हार गई। एक दिन उसने देखा कि उसकी वह जानी पहचानी सफ़ेद गाय, बर्फ की रानी रास्ते के बीचो-बीच मरी पड़ी है। उसके सर के ऊपर से बस का पहिया गुजर गया था। उसका सुंदर बछड़ा माँ के पास ही खड़ा है। सीता देवी इस दृश्य को अधिक देर तक नहीं देख सकी और भीड़ को चीरती हुई बस में चढ़ गई। इस कहानी में महानगरों में दिखाई देनेवाली एक ज्वलंत समस्या का सहज व सुंदर चित्रण किया गया है। सीता देवी की तरह कोमल हृदय की महिला किस तरह समस्याओं से जकड़ी हुई है, इस बात को भी कहानी रेखांकित करती है।

ईश्वरी संशय आरु प्रेम नामक कहानी सद्य विधवा ईश्वरी के मन में धर्म बहादुर राणा के प्रति जगने वाला प्रेम भाव और इससे उत्पन्न पाप बोध तथा उसके मोहभंग की एक लंबी कहानी के इर्द गिर्द घूमती है। ईश्वरी देवी अपने प्रेम भाव को अपने तक ही सीमित रखती है। धर्म बहादुर राणा के प्रति उसका अनुराग और उसके सान्निध्य पाने की लालसा ने किस तरह उसके हृदय को बांध रखा था, जिसके फलस्वरूप अपने स्वर्गीय पति के सामने वह अपने को किस तरह दोषी मानते हुए पश्चाताप करती है इस पूरे प्रकरण को इस कहानी में बड़ी ही सुंदरता से वर्णित किया गया है। रक्त-मांस के मनुष्य की इच्छाएं, अनुराग और सान्निध्य प्राप्ति की जो स्वाभाविक प्रवृत्ति है वह एक विधवा के मन में भी उसी स्वाभाविकता के साथ जागृत होती है, इस सच्चाई को बड़े ही कलात्मक ढंग से लेखिका ने इस कहानी में स्पष्ट किया है। पाप बोध भारतीय परंपरा वादी सोच का परिचायक है।

"... देखो, देखो, उसके हृदय में धर्म बहादुर का विश्वास उथल-पुथल मचा रहा है। एक अजीब अनुभूति ने सारे शरीर को जैसे भिगोकर नम कर दिया है। ऐसा लग रहा है मानो उसका यह शरीर किसी अन्य एक शरीर में एकाकार होना चाहता है। पीड़ादायक है, फिर भी अलौकिक है यह देह विनिमय की पीड़ा। क्या यही प्रेम है? लेकिन प्रेम इस शारीरिक पीड़ा से कहीं ऊपर है। यह प्रेम आत्मा में बसता है। आत्मा क्या है? आत्म क्या है? नहीं-नहीं, ईश्वरी को कभी इस प्रश्न का उत्तर अपने हृदय से नहीं मिला। ... फिर भी इस विशेष क्षण में सारे विचार, सारी भावनाएं उसी देह की ओर भागी जा रही हैं। ... नदी किनारे के रेत की तरह यह देह जैसे नदी में समा जाना चाहता है।

आह! देह रूपी यह कौन सी नदी है? शरीर का प्रत्येक अंग जैसे बोल रहा है और एकाकार हो रहा है... आह! हृदय में कैसी यह पीड़ा है? कैसी है यह पीड़ा छाती में? दोनों स्तनों की प्रत्येक नस जैसे जाग उठी है। कठोर हो गया है छाती का मांशल भाग।[5] यह ईश्वरी के मन का मुक्त आकाश है। जहाँ टिमटिमा रही हैं अलेख भावनाएँ। ईश्वरी के हृदय का दर्पण, जहाँ सब कुछ खुला है। जहाँ है शारीरिक भूख का स्वतःस्फुर्त प्रस्फुटन। धार्मिक अनुष्ठान के दौरान ऐसे एक क्षण के साथ आलिंगन बद्ध होने के कारण ईश्वरी बार-बार अपराध बोध से ग्रस्त हो जाती है। सभी जान गए हैं, सभी समझ गए हैं कि उसके मन और शरीर में अभी कैसा तूफान मचा हुआ है। सभी जानेंगे... । क्या सोचते होंगे लोग**?** ... ऐसे धार्मिक अनुष्ठान में ऐसे लोग भी आते हैं? लेकिन वह क्या करे? अन्य सभी भावनाओं को परे धकेलकर बस वही चेतनाहीन शक्तिशाली भावना मन और शरीर को नियंत्रित करती है"।[6]

मन्नू भंडारी की कहानियाँ

मध्यप्रदेश के भानपुरा नामक जगह में 3 अप्रैल 1931 को मन्नू भंडारी का जन्म हुआ। कोलकाता के बालिका शिक्षा सदन स्कूल में 1952 से 1961 तक प्रायः नौ वर्ष शिक्षकता की। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव के साथ 1959 में आपका विवाह हुआ। इसके बाद पुनः 1961 से 1964 तक कोलकाता के रानी बिड़ला कॉलेज में शिक्षकता की। मन्नू भंडारी ने 1964 से कई वर्षों तक दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस में अध्यापन कार्य किया और उज्जयनी विक्रम विश्वविद्यालय में प्रेमचंद सृजनपीठ के अध्यक्ष पद पर भी कुछ दिन रहीं। साहित्य सृजन में अभी तक भी लगी हुई मन्नू भंडारी जी की साहित्यिक कृतियां हैं- उपन्यासः महाभोज, आपका बंटी, एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ संयुक्त लेखन)**,** कहानीः एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु**,** संपूर्ण कहानियां, आत्मकथाः एक कहानी यह भी, नाटकः बिना दीवारों के घर, बाल साहित्यः आसमाता (उपन्यास)**,** आंखों देखा झूठ**,** कलवा (कहानी)।

गीत का चुंबनः

इस कहानी में आधुनिक युवती के मौन और अव्यक्त प्रेम की कुंठा का चित्रण है जो आधुनिक और प्राचीन परंपराओं के बीच छटपटा रही है। कहानी की नायिका कनिका एम ए की पढ़ाई कर रही है और वह एक वह अच्छी गायिका है। उसकी मौसी कनिका की इस कला में निखार लाने का हर संभव प्रयास करती है। माथुर साहब के यहाँ

आयोजित एक समारोह में शहर के सभी कवि, चित्रकार, गायक, साहित्यकार आदि जुटने वाले थे। मौसी ने किसी तरह कनिका को भी वहाँ भेज दिया। इस कार्यक्रम में कनिका की मुलाकात निखिल से होती है जिसके कई गीत वह गा चुकी है। श्रीमती माथुर के अनुरोध पर कनिका ने निखिल का एक गीत गाया, जिसे निखिल ने खूब पसंद किया। निखिल और कनिका का संबंध धीरे-

धीरे प्रगाढ़ होता गया। निखिल के प्रयासों से कनिका रेडियो में भी गाने लगी। वे नियमित मिलते और उनके बीच विभिन्न विषयों पर चर्चा होती। चर्चा के दौरान कनिका कहती है कि बैठक खाने में बैठकर स्त्री पुरुष के संबंधों पर बड़ी-बड़ी बातें करना आसान है लेकिन व्यवहारिक रूप से पुरुष बिल्कुल अलग होते हैं। इस तरह के चर्चा के दौरान एक दिन अचानक निखिल कनिका को बाहों में भर कर चूम लेता है। कनिका गुस्से से पागल हो जाती है और निखिल को एक तमाचा जड़ देती है। निखिल माफी मांग कर कनिका से दूर चला जाता है। एक सप्ताह बाद कनिका को एक पत्र प्राप्त होता है, जिसमें निखिल ने लिखा है- सच तुमने मेरी आंखें खोल दीं कि शारीरिक संबंध के परे भी लड़के-लड़की की मित्रता का कोई आधार हो सकता है और इसीलिए मुझे उस दिन का अपना व्यवहार कचोट रहा है। मुझे तुम पर जरा भी गुस्सा नहीं, अपने पर ही ग्लानि है। कनिका ने पत्र के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और तकिए में मुँह छिपाकर सिसकती रही।[7] इस कहानी में मध्ययुगीन संस्कार और प्राकृतिक मांग के द्वंद्व में उलझी आधुनिक नारी के प्रेम की कुंठा को दिखाया गया है। कनिका निखिल से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करती है, यह संबंध यौन भावनाओं से मुक्त है। निखिल के जीवन में अनेक लड़कियां आई हैं। उसके अनुसार कोई भी लड़की आलिंगन या चुंबन को सहज रुप से लेती है। कनिका निखिल से प्रेम करती है लेकिन इसके आगे वह नहीं बढ़ना चाहती। इस कहानी में लेखिका ने एक नए आदर्श और नैतिक बोध की स्थापना करने का प्रयास किया है।

बंद दरवाजों के साथ कहानी का मूल कथ्य यह है कि सुखी और सफल दांपत्य जीवन के लिए एक दूसरे को समझने की वृत्ति और सहानुभूति की दृष्टि आवश्यक है, भले ही उन का विवाह एक प्रेम विवाह हो। वैवाहिक जीवन केवल आकर्षण के सहारे नहीं चल सकता। आज नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है, लेकिन पुरुष हमेशा नारी से छल करता रहा है। पहले नारी पुरुष के संबंध स्पष्ट और खुले थे। पत्नी के अलावा पुरुष का अन्य नारी के साथ संबंध स्पष्ट और समाज मान्य था। आज का पुरुष पत्नी प्रेम का दिखावा करता है और परस्त्री के साथ संबंध भी बनाए रखता है। पत्नी हमेशा ही पति पर विश्वास करती रहती है। वास्तविकता का ज्ञान होने पर हृदय तार तार होने के बावजूद स्त्री संयम नहीं खोती। मंजरी और विपिन एक सुखी दांपत्य जीवन बिता रहे थे। अचानक मंजरी को विपिन के दूसरे जीवन के बारे में पता चला। विपिन का एक अन्य स्त्री के साथ केवल संबंध ही नहीं बल्कि एक बच्चा भी था। इधर मंजरी गर्भवती है। वह इस सोच के साथ जी रही थी कि भावी संतान उनके दांपत्य जीवन को और सुदृढ़ करेगी। लेकिन मंजरी का स्वप्न चूर-चूर हो गया। मंजरी एक प्राध्यापिका है। पति के रवैए से तंग आकर आखिर उसने संबंध विच्छेद कर लिए। सुख से तीन साल और दुख से दो साल ऐसे पाँच साल उसने विपिन के साथ गुजारे। अब अपने तीन वर्षीय पुत्र असित के साथ मंजरी अकेली है। तन और मन से दुखी मंजरी आखिर बेटे को हॉस्टल में रख देती है और दिलीप से विवाह कर लेती है। कॉलेज की सहकर्मियों की हिकारत भरी नजरों से परेशान वह नौकरी भी छोड़ देती है। अब वह तन और मन से संतुष्ट है, लेकिन बेटे की परवरिश के लिए आर्थिक कठिनाई भी महसूस करने लगी। ऐसे में एक दिन विपिन

का पत्र मिला जिसमें असित के परवरिश का आधा खर्च उठाने की बात थी। एक बार दांपत्य जीवन में दरार आया और उसकी जिंदगी टुकड़ों में बँट गई। नारीत्व और ममत्व के द्वंद्व में जीना मंजरी की नियति बन गई। मनुष्य न तो छूटी हुई जिंदगी को छोड़ पाता है और न चुनी हुई जिंदगी को पूरी तरह अपना सकता है। दोनों के द्वंद्व में वह क्षत-विक्षत हो जाता है। मंजरी की ऐसी ही मनोदशा इस कहानी में चित्रित की गई है।

ऊँचाई मन्नू भंडारी जी की कहानियों में अपना एक अलग अस्तित्व रखती है। इसमें नारी पुरुष संबंधों के स्थापित मूल्य और नए जीवन मूल्यों के बीच सीधा टकराव है। मन्नू भंडारी ने अपने एक पत्र में लिखा है- "ऊंचाई कहानी एक विवादास्पद कहानी रही है। छपते ही प्रशंसा और गालियां साथ-साथ मिलीं। यह एकमात्र ऐसी कहानी है, जिसे मैं फेक **(fake)** मानती हूं। यह जीवन में से उठाकर नहीं लिखी गई है, वरन एक कोटेशन पढ़कर लिखी गई थी"।

शिवानी और शिशिर आठ वर्षों के दांपत्य जीवन में सुखी हैं। उनकी बेटी हॉस्टल में रहती है। अचानक एक दिन शिवानी की मुलाकात अपने पूर्व प्रेमी से होती है। वह अभी तक अविवाहित है। शिवानी अपने पति की प्रशंसा करते हुए अतुल को उसके घर आने का न्यौता देती है। लेकिन अतुल उसके घर नहीं गया। वह इलाहाबाद में रहता है। शिवानी अपनी बेटी को हॉस्टल में रखने के लिए इलाहाबाद जाती है और उसके के अनुरोध पर एक रात वहीं रुक जाती है। अतुल भी प्रीति के लिए खिलौने ले कर आता है और उसके साथ काफी समय बिताता है। अगले दिन प्रीति को स्कूल में छोड़कर शिवानी अचानक अतुल के घर पहुंच जाती है। अतुल को यह अच्छा नहीं लगता। वह उसे लौट जाने को कहता है। शिवानी अतुल को शारीरिक सुख प्रदान कर कोलकाता लौट आती है। शिवानी और शिशिर का जीवन पूर्ववत चलता रहा। चार महीने के बाद शिशिर को सच्चाई पता चली। शिवानी ने भी बिना कुछ छिपाए सारी बातें उसे बता दीं। सुशील को इस बात का आश्चर्य हुआ कि हर छोटी छोटी बात उसे बताने वाली शिवानी इतनी बड़ी बात कैसे छिपा गई। एक ओर बेवफाई और दूसरी ओर धोखा। शिशिर ने दोहरी चोट महसूस की। शिशिर घर छोड़कर चला गया और पंद्रह दिन बाद वापस आया। दोनों के बीच बहस हुई। शिशिर चाहता था कि शिवानी अपनी गलती के लिए पश्चाताप करे। शिवानी ने शिशिर को विश्वास दिलाया कि मेरे जीवन में तुम्हारा जो स्थान है उसे कोई नहीं ले सकता। किसी से उसकी तुलना नहीं की जा सकती। शिशिर ने भी स्पष्ट किया कि शिवानी उसके जीवन की आवश्यकता है। दोनों में सुलह हुई और परिवार बना रहा।

त्रिशंकु कहानी में मां और बेटी, दो पीढ़ियों के चरित्रों द्वारा दोनों पीढ़ियों के अंतर को स्पष्ट किया गया है। नाना के विरोध करने के बावजूद माँ ने प्रेम विवाह किया था इसलिए माँ अपनी बेटी पर अंकुश लगाना नहीं चाहती। माँ, तनु को अपने और नाना के बीच हुई बहस को इतनी बार सुना चुकी है कि वह तनु को लगभग याद सा हो गया है। घर में मम्मी पापा और उनकी मित्र मंडली प्रेम आदि विषयों पर घंटों बात करते रहते हैं। आधुनिकता की बातें करते हैं, लेकिन प्रेम विवाह को सहज रुप से स्वीकार भी नहीं कर पाते। माँ कहती है कि वह आधुनिक विचारों वाली है।

बेटी को भी स्वतंत्र विचारों की बनाना चाहती है। उनके घर के पास ही मोहल्ले में कॉलेज में पढ़ने वाले कुछ छात्र रहते हैं। जिनमें शेखर और उसके दोस्त हैं। वह अक्सर तनु को छेड़ते हैं। आधुनिका माँ एक दिन उन लड़कों को चाय पर बुलाती है और तनु के साथ परिचय करवा देती है। वह कहती है कि लड़के और लड़कियों में अब तो खुले-आम मित्रता होनी चाहिए। अपने आप को आधुनिक कहने वाली माँ इस बात को औरों के सामने भी कहती फिरती है। शेखर और उसके मित्र अब अक्सर ही उनके घर आते रहते हैं। शेखर और तनु की दोस्ती का संबंध कुछ और आगे बढ़ गया। शेखर तनु को पढ़ाने लगा।

एक बार शेखर का तनु के नाम लिखा हुआ एक प्रेम पत्र माँ के हाथ लग गया। मम्मी काफी क्रोधित हुई और शेखर का घर में आना जाना बंद हो गया। अड़ोस पड़ोस में बातें होने लगीं। आधुनिका मम्मी अब क्या करे। मम्मी स्वयं जाकर शेखर को बुला लायी। इस तरह इस कहानी में एक मां का आधुनिकता बोध और पारंपरिक सोच के बीच का द्वंद्व उभरकर सामने आया है।

मामनि रॉयसम गोस्वामी और मन्नू भंडारी की कहानियों की समीक्षा

आधुनिक असमिया साहित्य की एक उज्ज्वल नक्षत्र मामनि रॉयसम गोस्वामी की कहानियों में उनके सहृदय मन की अभिव्यक्ति हुई है। उनकी रचनाओं में सृजनशील नारीवाद और देश का सांस्कृतिक सुगंध मिलता है। नारीवादी और मानवतावादी दृष्टिकोण से भरा हुआ है उनका रचना संसार। अद्भुत कहानियों से समृद्ध है उनका साहित्य। सामान्य से परे, लीक से हटकर अपना रास्ता खुद बनाने वाली रचनाकार है मामनि रॉयसम गोस्वामी। उनकी कहानियों को पढ़ते हुए हमें उनकी इन गुणों का सहज आभास मिलता है। उनकी लेखनी में समाज के उपेक्षित, लांछित, शोषित और पीड़ित जनता को आवाज दी गई है। किसी के प्रति भी भेदभाव नहीं रखने वाली मामनि रॉयसम गोस्वामी की रचनाओं में मानवता रची बसी है। नारी जीवन की समस्याएं और रहस्यों का सुंदर चित्रण इनकी कहानियों में देखने को मिलता है। स्वकीय चिंतन, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति और जीवन और जगत के प्रति उदार सोच ही इनकी रचनाओं की मूल शक्ति है।

हृदय नामक कहानी में रॉबर्ट ठाकुर का मानसिक द्वंद्व चित्रित हुआ है। ठीक उसी प्रकार **यात्रा** नामक कहानी में उनकी माननीय सोच का परिचय मिलता है। डॉक्टर प्रफुल्ल कटकी के शब्दों में, "यात्रा नामक कहानी में ऐसी एक करुण परिस्थिति को असामान्य दक्षता से चित्रित किया गया है कि इसे पढ़ने के बाद पाठक जैसे निःशब्द हो जाता है। इतनी ताकतवर है यह कहानी। रचना कौशल सूक्ष्म पर्यवेक्षण और अनपेक्षित परिणाम – ये तीनों उपादान इस कहानी में हैं। सबसे अधिक महत्वपूर्ण है इस कहानी में सशक्त रुप से चित्रित की गई मानवीय परिस्थिति। अन्य प्रत्येक कहानियों की तरह ही इस कहानी में भी लेखिका ने पाठकों के मन को झकझोरने में सफलता पाई है। विषय के साथ पाठक का एकात्मबोध जागृत करने में ही कला की सार्थकता है और इस सार्थकता को मामनि रॉयसम गोस्वामी ने प्रमाणित किया है। गोस्वामी जी की इस कहानी को पाठक

वर्ग से काफी प्रशंसा मिली है। जीवन में कुछ क्षण इतने निर्दयता के साथ आते हैं कि उस परिस्थिति में न्याय-अन्याय का प्रश्न प्रधान नहीं रह जाता। वह निर्दयी क्षण ही जीवन की वास्तविकता होती है। पीतांबर दमयंती की स्थितियाँ इसी वास्तविकता से रूबरू कराती हैं। **बरफर रानी** (बर्फ की रानी) कहानी में शहर का विद्रुप रुप चित्रित हुआ है। इसी तरह मामनि रॉयसम गोस्वामी की **ईश्वरीर संशय आरू प्रेम** कहानी में यौवन की व्यथा कथा चित्रित है। ईश्वरी के पार्थिव प्रेम की अभिलाषा, वैधव्य जीवन की शून्यता को भरने का परिचायक है। उसकी अनुभूतियाँ शास्वत हैं और शास्वत है अपार्थिव राम भक्ति। कौन अधिक सत्य है, इसके निर्णायक पाठक वर्ग हैं। ईश्वरी का मोहभंग भी नारी हृदय की एक और रहस्यमयी अभिव्यक्ति है। इसी प्रकार मामनि रॉयसम गोस्वामी की पशु नामक कहानी भी बेजोड़ और अनुपम है। गोस्वामी जी की अन्य कहानियां, यथा उदङ्ग बाकस (खाली बक्सा), नांगठ शहर (नंगा शहर), परश रतन, परश मणि, वीजाणु आदि में यद्यपि विविध कथा वस्तुओं को शामिल किया गया है, लेकिन सभी कहानियों में जो स्रोतस्विनी बह रही है, वह है मानवता का बीज मंत्र।

मन्नू भंडारी और मामनि रॉयसम गोस्वामी दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में दिखाई देती हैं जीवंत और अनुभव से प्राप्त मानवीय चेतना। दोनों की कहानियों में जीवन की वास्तविकताएँ दिखाई देती हैं। दोनों ही सामाजिक पाखंड और आडंबरों पर प्रहार करती हैं। सुंदर वस्त्र धारण करने के बावजूद नग्न रहने वाले समाज के लोगों के एक वर्ग अथवा समाज के कई लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले दूसरे वर्ग के कर्म जीवन को स्पष्ट चित्रित करती उनकी कहानियाँ शीशे की तरह साफ हैं। वे केवल कल्पना लोक की उड़ान नहीं भरतीं बल्कि जीवन की वास्तविकताओं को अपने अनुभवों के साथ बखान करती हैं। इनकी कहानियों में अक्सर देखने को मिलता है कोलाहलमय जीवन का खंडित चित्र। झूठ से दूरी बनाए रखने वाली इन दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में बड़े ही कौशल पूर्ण तरीके से सृजित होती हैं वास्तविकता से भरपूर विचित्र कहानियाँ।

मन्नू भंडारी की कहानियों के कथ्य पर नजर डालने से हमें मन्नू जी की चिंतन की गहराइयों का पता चलता है। भारतीय समाज में नारी कितनी ही आधुनिक क्यों न हो जाए, उनके मन मस्तिष्क में रूढ़िवादी सोच बसी रहती है जिस पर वह विजय प्राप्त नहीं कर सकती। पाश्चात्य शिक्षा संस्कृति में रंगी होने के बावजूद उनके हृदय में भारतीय संस्कार हमेशा बने रहते हैं। यही संस्कार वह चीज है, जो भारतीय नारी को आजीवन अपने में बांधे रखता है। इससे उसे मुक्ति नहीं मिल सकती। 'गीत का चुंबन' इसका एक सुंदर उदाहरण है। कनिका निखिल का सामीप्य चाहती है और इसमें किसी प्रकार का शारीरिक आकर्षण का भाव नहीं है। विवाह पूर्व शारीरिक संबंध रखने वाली स्त्री कभी भारतीय स्त्री नहीं हो सकती। कनिका और निखिल के इस प्रेम में खलल पड़ गई जब एक दिन निखिल ने अचानक कनिका को अपनी बाहों में भर कर चूम लिया। कनिका इसके लिए तैयार नहीं थी। उसने क्रोधित होकर निखिल के गाल में एक थप्पड़ जड़ दिया। निखिल के स्वाधीन आधुनिक सोच पर गहरा असर पड़ा। इसके बाद कहानी खत्म हो जानी चाहिए थी, लेकिन

खत्म नहीं हुई। कहानी में उभरकर सामने आया कनिका का हृदय। उसने अपने जमीर के विपरीत जाकर कोई काम तो नहीं किया तथापि इस घटना को लेकर वह परेशान रहने लगी। उसे स्वयं पर गुस्सा आया, पश्चाताप हुआ। निखिल के प्रति कनिका का प्रेम भाव होने के बावजूद निखिल के देह का स्पर्श उसे क्यों नागवार गुजरा, यही हमारा संस्कार है। इससे मुक्ति पाने के प्रयासों के लिए आवश्यक था साहसी कदम। लेखिका ने यहाँ यह कहना चाहा है कि भौतिक स्तर पर मनुष्य के सभी कार्य अपराध नहीं हो सकते।

ऊंचाई कहानी में इस बात को दिखाया गया है कि दांपत्य जीवन का मूल आधार आपसी समझ है। सुखी दांपत्य जीवन का मूल आधार है - आस्था, विश्वास और आपसी समझ। पारिवारिक जीवन की सुख शांति के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है कि पति, पत्नी एक दूसरे को ठीक से समझें। शिवानी के द्वारा गलत कदम उठाए जाने पर शिवानी को इसका दंड देने की बात सोचने के बावजूद शिशिर कुछ नहीं कर सका अथवा दूसरे शब्दों में उसने ऐसा कुछ नहीं किया। शिशिर और शिवानी ने एक दोनों को समझा, एक दूसरे की जरूरत को महसूस किया और उनका सुखी दांपत्य जीवन बरकरार रहा।

बंद दरवाजों के साथ कहानी में मंजरी और विपिन के दांपत्य जीवन में उत्पन्न कलह स्पष्ट रुप से सामने आता है। शांतिपूर्ण तरीके से चल रहे उनके वैवाहिक जीवन में तूफान आ जाता है, जब मंजरी को पता चलता है कि विपिन का किसी अन्य स्त्री के साथ भी संबंध है। अध्यापिका मंजरी समाज के ताने सुन-सुनकर नौकरी छोड़ देती है और उसके सामने मुँह बाए खड़ी हो जाती है आर्थिक परेशानियाँ। उसने सोचा था कि विवाह विच्छेद के बाद अपनी संतान के साथ वह सुखी जीवन व्यतीत कर सकेगी लेकिन आर्थिक विपन्नता ने उसके सपनों को चकनाचूर कर दिया। छूटे जीवन और चुने हुए नए जीवन के बीच एक ऐसा द्वंद्व है कि वह किसी एक को न तो पूरी तरह छोड़ सकती है और न ही अपना सकती है। यह विषम स्थिति ही उसकी नियति है।

त्रिशंकु कहानी में भी आधुनिक नारी की द्वंद्वात्मक मानसिकता जीवंत हो उठी है। इसलिए मन्नू भंडारी की कहानी त्रिशंकु का शीर्षक भी बड़ा ही सार्थक लगता है। आधुनिक नारी आज इसी द्वंद्वात्मक मानसिकता के साथ जीने को मजबूर है। सुंदर वस्त्र-आभूषण से सुसज्जित होने के बावजूद आधुनिक नारी हमेशा परंपरा से अर्जित संस्कारों से घिरी रहती है। इस बंधन से मुक्ति की राह ढूंढते हुए बेचैन दिखती है, आज की आधुनिक नारी।

तुलनात्मक समीक्षा

मामनि रॉयसम गोस्वामी ने अपनी एकांत साधना और निरंतर प्रयासों से असमिया साहित्य को विश्व दरबार में प्रतिष्ठित किया। उसी तरह हिंदी साहित्य में कहानी लेखिका के रूप में मन्नू भंडारी का भी अपना एक अलग स्थान है। मामनि रॉयसम गोस्वामी का असल नाम है 'इंदिरा गोस्वामी'। घर में प्यार से बुलाने वाले नाम 'मामनि' के साथ गोस्वामी उपाधि लगाकर उन्होंने

अपना लेखन कार्य शुरू किया। मन्नू भंडारी का भी असल नाम है 'महेंद्र कुमारी'। घर में सबसे छोटी होने के कारण सभी उन्हें 'मन्नू' कह कर पुकारते थे और इसी नाम से वे साहित्य जगत में लोकप्रिय हुईं। नाम के मामले में भी इन दोनों लेखिकाओं का सादृश्य उल्लेखनीय और मजेदार है। दोनों लेखिकाओं की कहानियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। दोनों लेखिकाओं को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, इसमें भी इन दोनों लेखिकाओं की सामान्य बात यह है कि 1976 में मन्नू भंडारी ने पद्मश्री पुरस्कार लेने से इनकार कर दिया था और गोस्वामी ने वर्ष 2002 में पद्मश्री पुरस्कार लेने से इनकार किया। भारतीय नारी का अनुपम परिचय माथे की बड़ी सी लाल बिंदी दोनों लेखिकाओं में एक अलग पहचान दिलाती है। इस संबंध में अनिता राजूरकर लिखती हैं – 'श्रीमती मन्नू भंडारी से जो कोई भी एक बार मिलता है, उनके माथे की बड़ी सी लाल बिंदी सदैव उसे याद रहती है'।[10] गिरिराज किशोर ने लिखा है- 'मन्नू जी का परिचय उस बिंदी से शुरू होकर आज उनकी रचनाओं में प्रवेश कर चुका है'।[11]

(क) मामनि रॉयसम गोस्वामी और मन्नू भंडारी दोनों ही भारतीय साहित्य में सार्थक कहानियों की स्रष्टा और कथा शिल्पी हैं।
(ख) कर्म क्षेत्र के मामले में दोनों लेखिकाएं दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़ी हुई हैं। इसलिए उनकी अनेक कहानियों का प्लॉट दिल्ली शहर है। जीवन का अधिकतर समय शहर में ही व्यतीत किए जाने के कारण दोनों लेखिकाओं की कहानियों में शहरी जीवन का महत्वपूर्ण स्थान है।
(ग) मामनि रॉयसम गोस्वामी और मन्नू भंडारी दोनों नारी होने के कारण उनकी कहानियों का मूल उपजीव्य है नारी संवेदना, संघर्ष और नारी संवाद। एक नारी के अंतर्मन को केवल एक नारी ही सही तरह से पहचान सकती है, इस बात को दोनों लेखिकाओं ने प्रमाणित किया है।
(घ) मामनि रॉयसम गोस्वामी और मन्नू भंडारी दोनों ही अपने आस-पास के वास्तविक चरित्र तथा घटनाओं से प्रभावित हैं और वह प्रभाव ही दोनों के मन मस्तिष्क को उद्वेलित करता है। इस उद्वेलन प्रक्रिया में जो नवनीत निकलकर सामने आता है वही कहानी के रूप में प्रकट होता है। शायद यही कारण है कि इनकी कहानियाँ जीवंत होती हैं और पाठकों से सीधे संवाद करती हैं। इन दोनों के लिए लेखन कार्य कोई पेशा नहीं बल्कि अनुभूति और सृजनशील अभिव्यक्ति का शक्तिशाली माध्यम है।
(ङ) दोनों लेखिकाओं के नारी चरित्र देवी के रूप में नहीं अपितु सभी माननीय गुण दोषों सहित, हाड़-मांस के सामान्य मनुष्य के रूप में अवतरित हुई हैं। मूल्यबोध का क्षय, परिवर्तनशील समाज में मनुष्यों की स्थिति, पाना और खोना, अनुभूति प्रवण हृदय प्रांगण में उथल-पुथल मचाती भावनाएं दोनों लेखिकाओं की कहानियों की प्राण-स्वरूप हैं। दोनों लेखिकाओं ने उनकी अनुभूतियों के साथ ईमानदारी दिखाई है।
(च) इन दो लेखिकाओं में एक भिन्नता देखी जाती है। मन्नू भंडारी की कहानियों के मुख्य चरित्रों में अधिकतर नारी पात्र ही हैं। इनकी कुल 48 कहानियों की मूल चरित्र नारी पात्र हैं और केवल 10

कहानियों में पुरुष मुख्य चरित्र के रूप में दिखाई देते हैं। मामनि रॉयसम गोस्वामी की कहानियों में यद्यपि कई नारी पात्र देखने को मिलती हैं तथापि वहाँ पुरुष पात्रों ने भी लगभग समान स्थान अधिकार किया है। मूलतः नारी चरित्रों को ध्यान में रखकर कहानियों की रचना की गई है।
(छ) कहानी के अंगो की व्याख्या संक्षेप में ऐसे की जा सकती है कि मामनि रॉयसम गोस्वामी की कहानियों में परिवेश का सुंदर चित्रण हुआ है। वातावरण का सजीव चित्र उकेरने में गोस्वामी सिद्वहस्त हैं। प्रकृति की सहायता से सुंदर काल्पनिक दृश्य बनाकर पात्रों की मानसिक स्थिति का आभास दिलाने में गोस्वामी जी निपुण हैं। इस मामले में मन्नू जी की कहानियाँ कुछ अलग हैं। परिवेश चित्रण की सहायता लिए बिना सहज और स्वाभाविक वर्णन और संवादों के माध्यम से उनकी कहानियाँ आगे बढ़ती रहती हैं। रचना प्रक्रिया की निजी शैली भी साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण करती है। प्रत्येक रचनाकार की अपनी एक अलग लेखन शैली होती है जो एक लेखक को दूसरे से अलग करती है।

निष्कर्ष:

दोनों लेखिकाओं की कहानियों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों लेखिकाएं प्रगतिवादी सोच रखती हैं। प्रगति का अर्थ है भीतरी और बाहरी यथार्थ चेतना का उत्तरोत्तर विकास। यहाँ किसी प्रगतिवादी आंदोलन की अवधारणा को लेकर चलने का प्रयास नहीं किया गया है बल्कि इन दोनों लेखिकाओं के चिंतनशील सृजनात्मक चेतना को स्पष्ट करने का प्रयास मात्र किया गया है। अनुभूतियों की अभिव्यक्ति ही साहित्यकार की रचना होती है। सबल अभिव्यक्ति ही रचना को संवेदनशील बनाती है और अनुभूति की सार्थक अभिव्यक्ति ही वह तत्व है जो पाठकों को आकृष्ट करता है। गोस्वामी और मन्नू भंडारी की प्रत्येक कहानी उनकी जीवंत अनुभूतियों और जीवन के अनुभवों का दस्तावेज है। मन्नू भंडारी ने कई बार कहा है कि वह कहानी नहीं लिखती बल्कि उनकी अनुभूतियाँ हैं जो उनके द्वारा कहानी लिखवाती हैं। दो भिन्न समाज और सांस्कृतिक वातावरण में पली-बढ़ी इन दो भारतीय लेखिकाओं का जीवन देखने का नजरिया एक ही है, इस बात का प्रमाण उनकी कई कहानियों में मिलता है। यद्यपि इन दोनों असमिया और हिंदी लेखिकाओं ने दो भिन्न सांस्कृतिक जीवन जिया और भोगा तथापि दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो किसी स्थान विशेष की न होकर सार्वजनीन हैं। मानव जीवन की विद्रूपताओं, विषमताओं और उसके कारण मानव जीवन में आने वाली हृदय विदारक वास्तविकताओं का चित्र दोनों ने अपनी अपनी रचनाओं में बड़ी ही कुशलता से उकेरा है। भारतीय कहानी साहित्य में इन दोनों लेखिकाओं का विशिष्ट स्थान है। केवल कहानी लेखिका के रूप में ही नहीं अपितु इसके संवर्धन, विकास और इसके भंडार को समृद्ध करने में दोनों कहानीकारों का योगदान अनस्वीकार्य है।

संदर्भ :

1. भराली, हेमंत कुमार (संपा) : मामनि रॉयसम गोस्वामीर गल्प समग्र

2. मामनि रॉयसम गोस्वामीर प्रिय गल्प, ज्योति प्रकाशन
3. भंडारी, मन्नू : मैं हार गई
4. भंडारी, मन्नू : यही सच है

सहायक ग्रंथ :

1. मामनि रॉयसम गोस्वामीर प्रिय गल्प : ज्योति प्रकाशन
2. राजूरकर अनीता : कथाकार मन्नू भंडारी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

LBP PUBLICATION